प्राक्कथन

भारतीय - साहित्य में हिंदी - साहित्य अपना विशेष स्थान रखता है । मानवीय व्यक्तित्व की सार्थकता समाज में ही होती है । साहित्य में मानव - जीवन की झाँकी प्रस्तुत होती है । साहित्यकार अपने साहित्य लेखन से समाज तथा देश की संस्कृति का रेखांकन करना अपना परम कर्तव्य समझता हैं । आधुनिक हिंदी - साहित्य पर पाश्चात्य विचार एवं सभ्यता का गहरा प्रभाव पड़ा । जिससे मनुष्य के जीवन-मूल्यों में तेजी से परिवर्तन आए । हिंदी-साहित्य में अनेक साहित्यकारों ने 'समाज जीवन' तथा 'नारी जीवन' को केंद्र में रखकर साहित्य निर्मिती की है । उसमें सबसे प्रमुख साहित्यकार है - प्रेमचंद, अमृतलाल नागर, बाळकृष्ण गुप्त, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा, जैनेंद्र, अज्ञेय, राजेंद्र यादव तथा महादेवी वर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान, शिवानी, मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा आदि । इन सभी साहित्यकारों ने भारतीय समाज की पौराणिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक सभी परिस्थितीयों का चित्रण किया हैं । जिसमें उन्हें सफलता मिली हैं ।

समाज निरंतर गतिशील एवं परिवर्तनशील है । जिन परंपराओं को हम अपनी पुरानी पीढ़ि से प्राप्त करते हैं वही समाज की संस्कृति है । भारतीय संस्कृति के गौरव का प्रतिनिधित्व करनेवाले 'सीता' और 'सावित्री' के नाम प्राचीन संस्कृति की महानता के दयोतक माने जाते हैं; किंतु नागर ने नारी की सहनशीलता को व्यक्ति और समाजद्वारा शोषण के संदर्भ में देखा है । सीता का नाम लेते समय हमारा माथा शर्म से झुक नहीं जाता ? निर्दोष नारी के इतने बड़े कलंक और कई अमानुषिक यातना को हम लोग झंडो पर काढ़कर पूजते है । इस प्रकार धार्मिक और सामाजिक रूढ़ि, परंपरा के कारण नारी को असंख्य यातनाएँ सहनी पडती है ।

भारतीय समाज ने स्त्री को पुत्री, पत्नी, माँ, बहन, देवी आदिशक्ति आदि रूपों में देखा हैं और उसकी पूजा भी की है, फिर भी स्त्री जन्म से पुरुष की भोगदासी बनकर ही रही है । 'वेश्यावृत्ति' इसका परिणाम है । हमारे समाज की चिरपरिचित एक ज्वलंत समस्या हैं 'वेश्यावृत्ति' । वेश्याएँ प्राचीन काल से हमारे समाज का अंग बनी हुई है । वेश्यावृत्ति का समर्थन करनेवाला एक बहुत बडा वर्ग भारत में है । फिर भी प्रत्यक्ष जीवन में वेश्याएँ समाज की दृष्टि में, घृणित या तिरस्कृत ही रही हैं । तो दूसरी और पुरुषों ने सती की भी प्रताड़ना की है । इस प्रकार पुरुष ना ही वेश्या को सुखी बना सकता है और ना ही सती को सुखी बना सकता है । कुलवधु और नगरवधु इस दोहरे संघर्ष में नारी ही पीसती जा रही है ।

ओजस्वी, स्फूर्त व्यक्तित्व से युक्त कथाकार अमृतलाल नागर हिंदी साहित्य जगत के प्रमुख

हस्ताक्षर हैं । उनका व्यक्तित्व बहुमुखी हैं । कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, बाल-साहित्य, पत्र-पत्रिकाएँ, अनुवाद-कार्य आदि सभी विधाओं में उन्होंने अपनी लेखनी चलाई हैं । उन्होंने हिंदी साहित्य को आज तक 125 से भी अधिक साहित्यिक कृतियाँ प्रदान की हैं । नागर का नाम स्वातंत्र्योत्तर युग के उपन्यासकारों में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । समकालीन जीवन की वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं का चित्रण इनकी कथाकृतियों की प्रमुख विशेषता हैं । व्यक्तिगत कुंठाओं तथा मानसिक विकृतियों की प्रतिक्रियात्मक संभावनाएँ इनकी रचनाओं में प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त हुई हैं।

अमृतलाल नागर हिंदी उपन्यास के विविध क्षेत्रों के प्रयोगधर्मी उपन्यासकार है । उन्होंने भारतीय 'समाज जीवन' तथा 'नारी जीवन' के सर्वांगीण पक्ष को दर्शाकर उसे यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया हैं । कहना आवश्यक नहीं है, कि ऐसे सजग, प्रतिबद्ध और प्रतिभासंपन्न रचनाकार के साहित्य पर अनुसंधान अपना महत्त्व रखता है ; किंतु आज तक "अमृतलाल नागर के 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में समाज जीवन तथा नारी जीवन" इस विषय को दृष्टि में रखकर स्वतंत्र रूप में किसी भी शोधार्थी ने अनुसंधान नहीं किया हैं । हिंदी अनुसंधान के क्षेत्र में यह कमी का द्योतक हैं। मेरा लघु शोध-प्रबंध इस अभाव की पूर्ति का प्रयास ही है । मैंने इस अनुसंधान को पूरी ईमानदारी एवं परिश्रम से प्रस्तुत किया है । इस संदर्भ में मैंने निष्कर्ष रूप से जो प्रतिपादन किया है, वह नारी की गरिमा को बनाए रखने एवं दिशा प्रदान करने में जरुर सहायक रहेगा, यह मेरा विश्वास है ।

विषय का महत्त्व -

1) सनातन काल से भारतीय समाज जाति, वर्णों और वर्गों में बँटा हुआ बहुस्तरीय समाज है । अतः संपूर्ण समाज ऊँच-नीच समूहों में विभाजित था । 'समाज-जीवन' के अध्ययन द्वारा उसमें निहित तत्वों की खोज करना और उसे समाज के सामने आदर्श रूप में प्रस्तुत करने की दृष्टि से विषय का चयन किया गया है ।

2) धार्मिक अनुष्ठान, आडंबर, व्रत, मेले, त्यौहार, परंपरा, रूढ़ियाँ और अंधश्रद्धा से ग्रस्त समाज में परिवर्तन लाने के लिए तथा सामाजिक मूल्यों को पुनः जागृत करने के लिए -

3) प्राचीन वैदिक काल में नारी की 'देवी' रूप में पूजा होती थी ; तब से लेकर आज तक लगातार नारी पतन की ओर बढ़ रही है ; इन पतन के कारणों को ढूँढने के लिए -

4) नागर आदर्शवाद के समर्थक थे । उनके साहित्य में चित्रित नारियाँ 'आदर्श भारतीय नारी' का प्रतिक है । इन नारी पात्रों को परखकर नागर कालीन 'नारी जीवन' का संक्षिप्त परिचय दे के लिए -

5) भारतीय कुलवधु संस्कार एवं संस्कृति की साक्षात् मूरत होती है । वह अपने नीति-मूल्यों को बनाए रखती है । पति को परमेश्वर मानकर उसकी पूजा करती है, उसके कुकर्मों पर पर्दा डालकर अपने सतीत्व की रक्षा करने में ही अपने जीवन की सार्थकता मानती है । नागर के उपन्यासों में चित्रित नारी के इन गुणों को प्रस्तुत करने के लिए यह विषय महत्त्वपूर्ण योगदान देता है ।

6) नारी जीवन के तिरस्कृत, अधःपतित अंग वेश्या को सामाजिक स्तर पर कौन - कौनसी नारकीय पीड़ाओं से गुजरना पडता है इसका नागर ने चित्रण किया है । इस युग में वेश्या समस्या, उसके कारण तथा समाधान आदि बातों पर उपन्यासों के माध्यम से व्यापक स्तर पर विचार-विमर्श करने के लिए इस विषय का चयन किया गया है । उपर्युक्त दृष्टि से विषय महत्त्वपूर्ण है ।

शोध प्रबंध का उद्देश्य -

यह सच है कि भारत में आधुनिकता के कारण काफी परिवर्तन आया है । फिर भी भारतीय समाज में जो रीति-रिवाज चल रहे हैं, वे नहीं बदलें । आजादी के बाद देश में निर्माण हुई जटिल समस्याओं की ओर बुद्धिवादियों का ध्यान आकर्षित हुआ । 'अमृतलाल नागर' ने 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में सामाजिक पृष्ठभूमि, परिवेश, आंतरिक संघर्ष तथा नारी जीवन पर अधिक बल दिया है। अतः 'अमृतलाल नागर' के 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास के विविध पहलुओं का विवेचन-विश्लेषण करना, ही मेरे लघु शोध-प्रबंध का मूल उद्देश्य बना है ।

स्वातंत्र्यपूर्व काल से प्रेमचंद से लेकर मैत्रेयी पुष्पा तक अनेक उपन्यासकारों ने नारी जीवन इस विषय को अपनाया हैं । सभी उपन्यासकारों ने स्वातंत्र्योत्तर काल के बाद आयी आधुनिकता पर अपनी-अपनी सोच तथा रचनात्मक सामर्थ्य दिखाया है । नारी के बाह्य जगत् के साथ-साथ उसके अंतर्जगत को भी साहित्य निर्माण का केंद्र बनाया गया है । नारी मन की गहराई, उसके जीवन में आनेवाले उतार-चढ़ाव, उसके कारण व्यक्तित्व में होनेवाले बदलावों को साहित्य में यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है । नारी अपने जीवन में अनेक समस्याओं से घिरी होती है । यह समस्याएँ आमतौर पर घर, परिवार तथा समाज से जुड़ी हुई होती है । नारी को व्यक्तिगत रूप में अनेक समस्याओं का मुकाबला करना पड़ता है । अतः नारी के आदर्श रूप के साथ ही नारी के उपेक्षित, शोषित रूप को भी महत्त्व दिया गया है ।

'सुहाग के नूपुर' इस उपन्यास की नायिका 'कन्नगी' के चरित्र से मैं अत्याधिक प्रभावित हुई हूँ । इस रचना के कथ्य ने मुझे चिंतन के लिए प्रेरित किया । इस उपन्यास में चित्रित सती तथा

वेश्याओं की दयनीय दास्तान से मैं अभिभूत ही नहीं हुई; बल्कि उस पर गंभीरता से सोचने लगी हूँ। इस उपन्यास में नारी जीवन को यथार्थ रूप में पेश किया गया है । नारी का समाज जीवन में जो स्थान है, वही शोध कार्य का प्राणतत्त्व है । इस सामाजिक उपन्यास में सामाजिक समस्या का चित्रण तथा नारी की विवशता का वर्णन हुआ है । प्रेम त्रिकोण के माध्यम से सामाजिक समस्या के साथ कुलवधु और नगरवधु के संघर्ष का चित्रण हुआ है । इन सब बातों को मद्दे नज़र रखते हुए आलोच्य विषय के अंतर्गत समाज जीवन में नारी की महत्ता तथा नारी जीवन को स्पष्ट करना ही मेरे लघु शोध-कार्य का मूल उद्देश्य है ।

स्पष्ट है कि, नागर के 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में नारी जीवन को प्रमुखता मिली है। फिर भी अब तक उनके 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में चित्रित 'समाज जीवन तथा नारी जीवन' पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान नहीं हुआ है । अतः मैंने ''अमृतलाल नागर के 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में चित्रित समाज जीवन तथा नारी जीवन'' को अपने शोध का विषय बनाकर उसे न्याय देने का प्रयास किया है ।

प्रस्तुत विषय का अध्ययन करते समय मेरे सामने कई सवाल उपस्थित हुए -

1. अमृतलाल नागर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की विशेषताएँ क्या हैं ?
2. अमृतलाल नागर के उपन्यासों की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ कौनसी हैं ?
3. अमृतलाल नागर ने 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में समाज जीवन को किस प्रकार शब्दबद्ध किया हैं ?
4. 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में नागर ने कौन - कौनसी कुप्रथाओं का चित्रण किया हैं ?
5. भारतीय समाज में नारी का स्थान क्या हैं ?
6. 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में नागर ने नारी के कौन - कौन से रूपों का चित्रण किया हैं ?
7. नागर के 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास की मूल संवेदना तथा केंद्रीय तत्त्व क्या हैं ?
8. क्या नागर का 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास भारतीय संस्कृति का द्योतक हैं ?

शोध विषय का स्वरूप और व्याप्ति -

प्रस्तुत लघु शोध - कार्य को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से निम्नांकित अध्यायों में विभाजित किया है -

प्रथम अध्यायः - 'अमृतलाल नागर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व परिचय'

इस अध्याय में अमृतलाल नागर के जीवन एवं साहित्य का परिचय दिया है । जीवन परिचय में जन्म, बचपन, माता-पिता, दादा-दादी, विवाह, नौकरी के बारे में जानकारी दी गई हैं । व्यक्तित्व के अंतर्गत अंतरंग, बहिरंग तथा साहित्यिक व्यक्तित्त्व का परिचय दिया गया है। साथ ही नागर को मिले विविध पुरस्कारों का भी विवेचन किया है । कृतित्व के अंतर्गत अमृतलाल नागर के उपन्यासों का विषयगत विवेचन किया है । अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है ।

द्वितीय अध्यायः - "अमृतलाल नागर के 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास की विषयवस्तु"

इस अध्याय में प्रेमचंदोत्तर युग के सशक्त रचनाकार अमृतलाल नागर के 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास की कथावस्तु प्रस्तुत की गई है । इस उपन्यास में नागर ने यह व्यक्त किया है कि, पुरुष ना तो पत्नी को देवी का सम्मान दे सकता है और न ही वेश्या को पत्नी के रूप में स्वीकार कर सकता है । अपनी इस बात को सिद्ध करने के लिए उन्होंने कोवलन को चंचल रूपासक्त मन के प्रतीक रूप में चित्रित किया है । तथा कुलवधु , नगरवधु के संघर्ष को चित्रित किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है ।

तृतीय अध्याय - "अमृतलाल नागर के 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में समाज जीवन"

इस अध्याय में विवेच्य उपन्यास में चित्रित समाज जीवन का विवेचन किया गया है । उपन्यास में स्थित समाज जीवन, पुरुषप्रधान संस्कृति, विवाह प्रथा, देवदासी प्रथा, वेश्या प्रथा, रीति-रिवाज, उत्सव आदि का यथार्थ चित्रण हुआ है । इसमें शोषक-शोषित संघर्ष, आर्थिक समस्या, धार्मिक वातावरण, राजनीतिक वातावरण, आत्मिक प्रेम संबंध, टूटते हुए पारिवारिक जीवन का चित्रण, शीलभ्रष्ट व्यक्तियों की समस्या आदि का विवेचन-विश्लेषण किया है । अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय - 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में चित्रित नारी जीवन "

प्रस्तुत अध्याय में आलोच्य उपन्यास के नारी पात्रों का विभिन्न रूपों में विभाजन किया गया है । नारी के विविध रूपों में पारिवारिक रूपों के अंतर्गत पुत्री, पतिव्रता पत्नी, वात्सल्यमयी माता, व्यभिचारी माता आदि का चित्रण किया गया है । नारी के परिवारेतर रूपों के अंतर्गत दासी, देवदासी, कलंकिता, प्रेमिका आदि रूपों में अंर्तभाव किया गया है । नारी जीवन की समस्याओं को

भी प्रस्तुत किया है । उनमें प्रमुख रूप से वेश्या समस्या, अवैध मातृत्व की समस्या, कुलवधु , नगरवधु की समस्या को विश्लेषित किया गया है । अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

उपसंहार -

अंततः सभी अध्यायों में किए गए विश्लेषण द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निश्चित विचार व्यक्त करते हुए सामाजिक समस्या तथा नारी समस्या को चित्रित किया गया है । नारी जागृति के लिए नागर ने आवाज उठाई है । नागर के 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में नारी की महत्ता, स्थिति तथा यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है । तात्पर्य - प्रस्तुत उपन्यास नारी के विविध रूपों को व्यक्त करते हुए नारी जीवन की कथा - व्यथा व्यक्त करता है । तत्पश्चात् अंत में आधार ग्रंथ सूची तथा संदर्भ ग्रंथ सूची दी गयी है ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता -

1. "अमृतलाल नागर के 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में चित्रित समाज जीवन और नारी जीवन" इस विषय पर किया गया अनुसंधान पूर्णतः मौलिक है; क्योंकि मेरी अल्पमति के अनुसार यह विषय अछूता ही था ।
2. नागर के कथा साहित्य में अभिव्यक्त हुए पुरूष तथा नारी पात्रों ने तत्कालीन जीवन-मूल्यों को, आदर्शों को, यथार्थ को बखूबी प्रस्तुत किया है, जो बिल्कुल हटकर है। जो पाठकों को चिंतन करने के लिए प्रेरित तो करते ही है और साथ में अपनी छबि पाठकों के मन पर अंकित भी करते है ।
3. उपन्यास में समाज में स्थित उच्च वर्गीयों की विलासप्रियता पर व्यंग्य कसकर वेश्या तथा देवदासी प्रथा को उजागर किया है । इन कुप्रथाओं का सीमोल्लंघन कर नागर ने सामाजिक जागृति लाने का आवाहन किया है ।
4. नारी क अबला रूप उसे किस तरह शापित करता है, पथभ्रष्ट करता है इसका विश्लेषण यथार्थरूप में हुआ है । इन सब विशेषताओं का, नारी जीवन के विविध रूपों का वर्णन विश्लेषण ही इस लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता है ।

- ऋणनिर्देश -

हर्ष का विषय है कि,"अमृतलाल नागर के 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में चित्रित समाज जीवन तथा नारी जीवन" लघु शोध-प्रबंध प्रस्तुत करने का अवसर मुझे मिला । मेरा यह शोध ग्रंथ 'समाज जीवन' तथा 'नारी जीवन' को गहराई से समझने की एक कोशिश मात्र है । मैं अपने नारी जीवन की सार्थकता समझती हूँ कि, मुझे 'नारी जीवन' के विभन्न पहलुओं को देखने - परखने का अवसर मिला है । यह शुभ अवसर मुझे अमृतलाल नागर जैसे महान साहित्यकार के उपन्यास पर एम्. फिल्. उपाधि के लिए शोध कार्य करने से मिला है । उनके उपन्यास के नारी पात्र एक ओर गुलाबकी पँखुडी के समान कोमल है, तो दूसरी ओर वज्र के समान कठोर भी है ।

मेरे शोध प्रबंध की दिशा-निर्देशिका डॉ. रूख़साना महामूदमियाँ शेख जी की मैं चिरऋणी हूँ । इन्हीं के प्रेमपूर्ण मार्गदर्शन सें मुझे "अमृतलाल नागर के 'सुहाग के नूपुर' उपन्यास में चित्रित समाज जीवन तथा नारी जीवन" के अध्ययन का सौभाग्य मिला । वे मेरे अंतरंग की गुरुमाता बनी रहीं । उन्होंने मेरे जीवन के कठीनतम क्षणों में मुझे शोध कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया । उन्होंने तथा उनके परिवार ने मेरा बेटी की तरह खयाल रखा । वाक़ई में मैंने डॉ. शेख मॅडम के रूप में 'महागुरु' की प्राप्ति की है, जिसे मैं अपना परम सौभाग्य समझती हूँ । अतः शेख मॅडम जी की मैं शतशः ऋणी हूँ । उन्हें देखकर मुझे ये एहसास होता है कि -

"गुरू गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाई,
बलिहारी गुरु आपनी जिन गोविंद दियो बताई ।"

मेरे संशोधन में मुझे अनेक लोगों का मार्गदर्शन तथा सहयोग मिला, उनमें 'लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज, सातारा' के प्राचार्य श्री. सुहास साळुंखे, हिंदी विभाग प्रमुख श्री. डॉ. बी. डी. सगरे जी ने तो हमेशा से ही कुछ कर दिखाने की मेरी जिजीविषा को सदा प्रज्वलित रखा । साथ ही 'मथुबाई गरवारे कॉलेज, सांगली' के हिंदी विभाग प्रमुख डॉ. आर. जी. देसाई जी तथा कॉलेज के ग्रंथपाल और कर्मचारियों की भी मैं आभारी हूँ । शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ. पद्मा पाटील जी आदि सभी विद्वान गुरुजनों के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ ।

मेरे शोध के दौरान मेरे परिवार ने मुझे हर क्षण प्रोत्साहित किया । मेरे पिताजी श्री. बाळासाहेब लंबे एवं माताजी सौ. शालन लंबे के चरणों में मैं नतमस्त हूँ । क्योंकि उनके स्नेहपूर्ण आशीवार्द का ही परिणाम मेरा यह शोध कार्य है । मेरी दादी, चाचा -चाची, भाई-बहन ने मुझे शोध के लिए सदा प्रेरित किया है । साथ ही मुझे सदा प्रेरणा एवं उत्तेजना देनेवाले मेरे सभी

'स्नेहगणों' का मैं अपनी ओर से आभार प्रकट करती हूँ ।

प्रबंध लेखन का कार्य करते समय अनेक विद्वानों, लेखकों के मौलिक विचारों ने मुझे प्रभावित किया अतः उनके प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ । इस लघु शोध-प्रबंध का लेखन करते समय संदर्भ ग्रंथों के लिए मुझे अनेक ग्रंथालयों की सहायता लेनी पड़ी । उनकी सहायता के बिना मेरा यह प्रबंध निश्चित रूप से पूर्णता तक नहीं पहुँच पाता । मैं शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, एल.बी.एस्. कॉलेज सातारा, मथुबाई गरवारे कॉलेज, सांगली तथा जयसिंगपूर कॉलेज, जयसिंगपूर के ग्रंथपाल तथा कर्मचारियों की आभारी हूँ ।

कम समय में व्यस्तता के बावजूद भी मेरे लघु शोध को टंकित करनेवाले सौ. मीना खबाले, सौ. अमृता गतारे, कु. सचिन लोहार, कु. सागर कोळी, श्री. कांतिनाथ चौगुले, सौ.कांचन चौगुले के प्रति मैं आभारी हूँ, उनके सहयोग से ही मेरा कार्य अंतिम स्थिति तक पहुँचा हैं । इसके अतिरिक्त उन सब ज्ञात - अज्ञात साथियों की मैं आभारी हूँ कि जिनका सहयोग मुझे मिला हैं ।

समय के अभाव में छपाई के वक्त कुछ गलतियाँ हो गई हो तो मुझे माफ कीजिए ।

स्थान - सातारा

तिथि - 20 फरवरी, 2009

अनुसंधानकर्ती

कु. पूनम बाळासाहेब लंबे